यज्ञ रोगोपचार एवं जैव कृषि

यज्ञ रोगोपचार का पौराणिक विज्ञान वर्णन करता है कि पौधों एवं जमीन को 75 % से अधिक पोषक तत्व वायुमंडल के जरिये प्राप्त होता हैं अतः यदि यज्ञ से आप वायुमंडल को अधिक पौष्टिक एवं सुगंधित बनाते हैं तो पौधों पर एक प्रकार की रक्षक परत (कोटिंग) आ जाती है और रोग, फफूंद आदि बलाएं नही पनपती है। पौधों की सांस लेने की क्षमता में वृद्धि होती है और वायुमंडलीय विषों का विषैला प्रभाव समाप्त हो जाता है।

यज्ञ रोगोपचार में बुनियादी साधन अर्थात उपकरण अग्निहोत्र है, उदाहरण के रूप में कास्य पिरामिड में प्रज्वलित लघु अग्नि सूर्योदय के सूर्य की पहली किरणों के आगमन के साथ वस्तुतः समक्रमिक होती या बनाती है। सूर्य की प्रथम रश्मियां सम्पूर्ण वायुमंडल पर परिशोधिक प्रभाव डालती है। पौराणिक विज्ञान में सूर्योदय का वर्णन नीचे दिया गया है –

''सूर्योदय पर तमाम अग्नियां, विघुतें, तेजो वह तत्व एवं विलक्षण (अतिसूक्ष्म) ऊर्जायें सूर्य से उत्सर्जित हो पृथ्वी की ओर प्रवाहित होती हुई बाढ़ सदृश प्रभाव उत्पन्न करती है। यह विस्मयकारी होता है। यह वृहद प्रभाव अपने रास्ते के पड़ने वाली अशुद्धियों को समाप्त करता है और प्रत्येक वस्तु को शुद्ध करता है। यह अविच्छिन्न ऊर्जा जीवन धारा सर्व जीवन को आनंदित करती है। सूर्योदय पर वह संगीत सुना जा सकता है। प्रभात अग्निहोत्र मंत्र उसी संगीत का सार यानि् सच है। यह उसी वृहद प्रवाह की सारयुक्त ध्वनि है। सूर्यास्त पर वृहद प्रवाह परावृत्त हो जाता है।''

हमने सैकड़ों हेक्टेयर क्षेत्र की भूमि, खेती, पौधों वृक्षों एवं जल पर यज्ञ के प्रभावों का पर्याप्त प्रमाण प्रयोग (अभिलेख प्रस्तुतीकरण) किया है। मानव, पशु एवं पेड़–पौधों के रोगों का उपचार भी अग्निहोत्र राख से किया जाना विख्यात है। अग्निहोत्र मानसिक रोगोपचार के लियु विख्यात है।

पौराणिक परंपराओं में यह कहा गया है कि वायुमंडल के जरिये जमीन को आहार दिये जाने से कई चीजें हासिल की जा सकीं है। हमने इन तथ्यों का परीक्षण नहीं किया है तदापि कुल मिलाकर प्रभावों को चश्मदीद देखा है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

- प्रदूषण के चलते जमीन, पानी एवं हवा में जो कैंसर जनक तत्व पाये जाते हैं अग्निहोत्र वायुमंडल पर इन तत्वों के असर को कम कर सकता है।
- प्रदूषण से कीड़े–मकौड़ों से आनुवंशिक (जेनेटिक) परिवर्तन की ओर प्रवृत्ति को देखा जाता है। यह परिवर्तन जब कई गुना होना शुरू होता है तो यह विकराल हो जाता है। कीट–कीड़े फसलों पर आक्रमण कर उन्हें तबाह कर देते है। यदि हम इसमें सूखा और बाढ़ को ज़ोंड कर देखें तो मानव भूखा रहेगा। अग्निहोत्र वायुमंडल इसका एकमात्र बचाव है।
- प्रदूषण से परोपजीवी बैक्टीरिया में वृद्धि पृथ्वी के पोषकों को लूट लेती है। अग्निहोत्र वायुमंडल पोषकों को पुनः जमीन में स्थापित करता है।
- प्रदूषण के चलते कीट कृासमेंटिग शुरू कर देते है और वर्णशंकर उत्पन्न होने लगते हैं। कीट अपने जीवन चक्र को बदलना शुरू कर देते हैं और शीत से प्रतिरोध विकसित कर लेते है। इससे विनाशकारी कीटों में जनसंख्या की जबर्दस्त बढोत्तरी होती है और हमें फसलों एवं बीमारियों की भारी मुश्किलें होती है। अग्निहोत्र इस रूख को बिल्कुल उलट देता है और पोषकों को पुनः जमीन में स्थापित करता है।
- जमीन में पोषकों की संरचना का ह्रास होता है और इसका बहुत बड़ा प्रभाव खाद्य आपूर्ति पर पड़ता है। बैक्टीरिया के रासायनिक एवं आणविक ढांचे में परिवर्तन होता है और वे पारंपरिक चिकित्सीय विधियों से परे हो जाते हैं। यदि हम यज्ञ रोगोपचार कृषि का अभ्यास करते है तो चीजें सुधर जाएंगी।
- जब पृथ्वी के अन्तर्भाग से रेडियोधर्मी कण एवं विषाक्त गैसें निस्तारित होती हैं तो यज्ञ रोगोपचार ही हमारा एकमात्र बचाव अर्थात् संरक्षण है।